(9)

DESHBANDHU COLLEGE 2023 2024 LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

[This question paper contains 2 printed pages.]

Your Roll No..............

Sr. No. of Question Paper : 5210 **G**

Unique Paper Code : 12051501

Name of the Paper : Pashchatya Kavyashastra

Name of the Course : B.A. (Hons.) Hindi

Semester : V

समय : 3 घण्टे पूर्णांक : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।
2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. अरस्तू के त्रासदी सिद्धांत का विवेचन कीजिए। (12)

अथवा

उदात्त की अवधारणा पर विचार करते हुए उनके अवरोधक तत्त्वों पर प्रकाश डालिए।

2. कॉलरिज के कल्पना सिद्धांत का निरूपण कीजिए। (12)

P.T.O.

अथवा

वस्तुनिष्ठ सहसंबंध सिद्धांत की विवेचना कीजिए ।

3. स्वच्छंदतावाद पर प्रकाश डालिए । (12)

अथवा

संरचनावाद का सामान्य परिचय दीजिए ।

4. प्रतीक को उदाहरण के साथ स्पष्ट कीजिए । (12)

अथवा

बिंब से आप क्या समझते है ? बिंब के विविध प्रकारों का विवेचन कीजिए ।

5. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए - (9,9,9)

(क) विरेचन सिद्धांत

(ख) काव्य भाषा पर वर्ड्सवर्थ

(ग) मार्क्सवादी आलोचना

(घ) निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत

(ङ) मिथक

(10)

[This question paper contains 4 printed pages.]

DESHBANDHU COLLEGE 2023 2024 LIBRARY Kalkaji, New Delhi-19

Your Roll No...............

G

Sr. No. of Question Paper : 5255

Unique Paper Code : 12051502

Name of the Paper : हिन्दी नाटक, एकांकी

Name of the Course : B.A. (H) Hindi

Semester : V

Duration : 3 Hours

Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना अनुक्रमांक लिखिए।

2. सभी प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. निम्नलिखित की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (9×3=27)

(क) रोअहु सब मिलिकै आवहु भारत भाई।

हा ! हा ! भारत-दुर्दशा न देखी जाई ।।

सबके पहिले जेहि ईश्वर धन बल दीनो

सबके पहिले जेहि सभ्य विधाता कीनो।

P.T.O.

अथवा

भारतकिरिन जगत् उँजियारा ।
भारतजीव जिअत संसारा ।।
भारत वेदकथा इतिहास ।
भारत वेद प्रथा परकासा ।।

(ख) यह कसक अरे आंसू सह जा ।
बनकर विनम्र अभिमान मुझे
मेरा अस्तित्व बता, रह जा ।
बन प्रेम छलक कोने-कोने
अपनी नीरव गाथा कह जा
करुणा बन दुखिया वसुधा पर
शीतलता फैलाता बह जा ।

अथवा

रानी, तुम भी स्त्री हो। क्या स्त्री की व्यथा न समझोगी? आज तुम्हारी विजय का अंधकार तुम्हारे शाश्वत स्त्रीत्व को ढक ले, किन्तु सबके जीवन में एक बार प्रेम की दीपावली जलती है।

जली होगी अवश्य। तुम्हारे जीवन में वह आलोक का महोत्सव आया होगा, जिसमें हृदय, हृदय को पहचानने का प्रयत्न करता है, उदार बनता है और सर्वस्व दान करने का उत्साह रखता है। मुझे शकराज का शव चाहिए।

(ग) बकरी को क्या पता था
मरकर बन के रहेगी,
पानी भरेंगे लोग
और वह कुछ न कहेगी,
जा-जा के सींच आएगी
हर एक की क्यारी,
मर कर के भी बुझाएगी
वह प्यास तुम्हारी।

अथवा

तब मैं स्वयं तलवार लेकर कुँवर की रक्षा करूँगी। भैरवी बनकर युद्ध करूँगी। मरते-मरते मैं उसकी तलवार के टुकड़े-टुकड़े कर दूँगी। उसके और मेरे कुँवर के बीच में मेरे खून का समुद्र लहराएगा जिसे वह इस जीवन में पार भी न कर सकेगा।

2. 'भारत-दुर्दशा' नाटक का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

अथवा

'भारत-दुर्दशा' नाटक की भाषा-शैली पर प्रकाश डालिए।

3. 'ध्रुवस्वामिनी' नाटक की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए। (12)

अथवा

नाटक के तत्त्वों के आधार पर ध्रुवस्वामिनी की समीक्षा कीजिए।

4. 'बकरी' नाटक में निहित व्यंग्य स्पष्ट कीजिए। (12)

अथवा

'बकरी' नाटक की मूल संवेदना पर प्रकाश डालिए।

5. 'सूखी डाली' का प्रतिपाद्य लिखिए। (12)

अथवा

एकांकी के तत्त्वों के आधार पर 'तीन अपाहिज' की समीक्षा कीजिए।

(11)

DESHBANDHU COLLEGE
2023
2024
LIBRARY
Kalkaji, New Delhi-19

[This question paper contains 4 printed pages.]

Your Roll No..............

G

Sr. No. of Question Paper : 5365

Unique Paper Code : 12057503

Name of the Paper : **अस्मितामूलक विमर्श और हिंदी साहित्य**

Name of the Course : **B.A. (H) Hindi, DSE**

Semester : **V**

Duration : 3 Hours

Maximum Marks : 75

छात्रों के लिए निर्देश

1. **इस प्रश्न-पत्र के मिलते ही ऊपर दिए गए निर्धारित स्थान पर अपना** अनुक्रमांक लिखिए।

2. **सभी** प्रश्न अनिवार्य हैं।

1. **दलित विमर्श के संदर्भ में डॉ. भीमराव अंबेडकर के योगदान को स्पष्ट कीजिए।**

अथवा

स्त्रीवाद की विकास-यात्रा का निरूपण करते हुए उसके प्रमुख सरोकारों का उल्लेख कीजिए। (15)

P.T.O.

2. किन्हीं **तीन** अंशों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए : (10×3=30)

(क) बारात ठहराने के लिए स्कूल का बरामदा ही मिल पाया था। प्रधान जी ने स्कूल खोल देने की हामी तो भर दी थी। लेकिन ऐन वक्त पर हेडमास्टर कहीं रिश्तेदारी में चले गए थे। काफी भाग-दौड़ के बाद भी चाबी नहीं मिली थी। आखिर हारकर बारात को बरामदे में ही ठहराना पड़ा था। स्कूल में जो हैंडपंप था, एक रात पहले किसी ने उसका हत्था और वाल्व भी खोल लिए थे। पीने के पानी का और कोई इंतजाम वहाँ नहीं था। बड़ी मुश्किल से दो मिट्टी के घड़े ही मिल पाए थे।

अथवा

'कहाँ है मेरा सूरज, कहाँ है मेरा शीतल पवन, कहाँ गई इंद्रधनुषी छटा, कहाँ गई बरसाती फुहारें, कहाँ है मेरी प्यारी समतल भूरी धरती और कहाँ है उस धरती पर खिल रहे रंग-बिरंगे नाना प्रजातियों के मेरे फूल?' गोविंद गुरु अर्धनिद्रावस्था में बहके।

(ख) रहड़ के जगह नाहीं, जोतइ के जमीन कहाँ
कहैं देबे गाँव से निसार।
घरवा के नमवाँ पे एकही मड़ैया में,
ससुई पतोहू परिवार।।

मेघा और मगर गोह, साँप मूस खाई हम,
करी गिलहरिया शिकार।
कुकुरा के साथ धाई जुठली पतरिया पै
पेटवा है पपिया भंडार।।

अथवा

मुरझाने पर मसलकर फेंक दी गई,

जलाई गई।

उसकी राख बिखेर दी गई

पूरे गाँव में।

रात को बारिश हुई झमड़कर।

अगले ही दिन

हर दरवाजे के बाहर

नागफनी के बीहड़ घेरों के बीच

निर्भय - निस्संग चम्पा

मुस्कुराती पाई गई

(ग) एक छोटी लड़की शाम से जंगले पर चुपचाप बैठी हुई है। आज वह खेलने भी नीचे नहीं उतरी। सहेलियाँ आईं, उसने झिड़क दिया। खामोश निगाहें दीवार पर बड़ी होती छायाओं को चुपचाप देख रही है। सूरज डूब गया। वह वहीं बैठी हुई है। हवा में ठंडक बढ़ गई है दाई माँ स्वेटर पहना गईं। उसने पहन लिया। खाने के लिए पूछा तो फिर मना कर दिया। सामने वाले मकान में अपनी दोस्त चित्रा के घर भी खेलने नहीं गई।

अथवा

एक ओर सामाजिक व्यवस्थाओं ने स्त्री को अधिकार देने में पुरुष की सुविधा का विशेष ध्यान रखा है, दूसरी ओर उसकी आर्थिक स्थिति भी परावलंबन से रहित नहीं रही। भारतीय स्त्री के संबंध में पुरुष का भर्ता नाम जितना यथार्थ है उतना संभवतः और कोई नाम नहीं। स्त्री, पुत्री पत्नी, माता आदि सभी रूपों में आर्थिक दृष्टि से कितनी परमुखापेक्षणी रहती है, यह कौन नहीं जानता। इस आर्थिक विषमता के पक्ष और विपक्ष दोनों ही में बहुत-कुछ कहा जा सकता है और कहा जाता रहा है। आर्थिक दृष्टि से स्त्री की जो स्थिति प्राचीन समाज में थी उसमें अब तक परिवर्तन नहीं हो सका, यह विचित्र सत्य है।

3. किन्हीं तीन पर टिप्पणी लिखिए (10×3=30)

(क) मदारी पासी की क्रांतिकारिता

(ख) 'मुर्दहिया' में व्यक्त ग्रामीण संस्कृति

(ग) दलित स्त्रीवाद पर आक्षेप

(घ) गोविंद गुरु का व्यक्तित्व

(ङ) 'मैं किसकी औरत हूँ' की मूल संवेदना

(च) आदिवासी पहचान का सवाल और साहित्य में उसकी अभिव्यक्ति